संकल्प को शक्ति बनायें

एक कॉलेज का विद्यार्थी जो चाहता था वो उसे नहीं मिला, वो बन नहीं पाया जो बनना चाहता था। वो हताश होने लगा, वो मन से हार गया। वो इतना निराश हो गया कि उसके मन में संकल्प चलने लगे कि अब मुझे जीना नहीं है। पढ़ाई तो उसने कर ली लेकिन मन से वो हार गया। तो महत्त्व ज़्यादा किसका हुआ? मन की शक्ति का। तो मन को शक्ति कहां से मिले? मन की शक्ति बढ़ेगी अपने घर से। घर में भी वो ऊर्जा कैसे पैदा होगी? हमारे बोलचाल के शब्दों से।

आपने सुना होगा, पेड़-पौधों पर भी हमारी शक्ति का असर पड़ता है। हम सब ने ये अनुभव किया है। सिर्फ सुना नहीं है, अनुभव भी किया है। एक बार की बात है, हमारे ब्रह्माकुमारीज़ के एक सेवाकेन्द्र पर आम का पेड़ था। बहुत फल आते थे उसमें। और वहां आश्रम में दो छोटी बहनें रहती थीं, वो बोलती रहती थीं कि इतने सारे फल आते हैं, हम किसको दें, किसको न दें,

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

किसको भेजें, इसमें ही हमारा समय चला जाता है। हम दो ही बहनें हैं, थक जाते हैं। ऐसे सामान्य बोल बोलती रहती थीं। उनका कोई विशेष भाव भी नहीं था। लेकिन दूसरे साल उस पेड़ में फल आये ही नहीं। और तीसरे साल में भी नहीं आये। वे सोचने लगीं कि ये फल क्यों नहीं आ रहे हैं! फिर उन्होंने आंगन में उस आम के पेड़ के नीचे बैठकर मेडिटेशन किया कि फल आ जायें। ऐसे रोज़ अभ्यास किया। तो उसमें फल आ गये। अच्छे फल आये। तो ये असर हुआ हमारी शक्ति का। ये है हमारी संकल्प की शक्ति। ये हमारे संकल्पों का प्रकृति पर असर है।

इसी तरह आप अगर प्रयोग करना चाहते हैं तो अपने घर में दो पौधे रखें। दोनों को पानी दें नियमित रूप से। एक पौधे को ऐसे ही दें और एक पौधे को जैसे कि बात करते हुए कि ये बहुत अच्छा है, इसमें फल आयेगा। तो आप देखेंगे कि जिसे आप प्यार देते हुए पानी देते थे, उसका विकास अच्छा होगा। आप करके देखें।

लेकिन ये सब सम्भव तब है जब हमारे अंदर इंटेंशन अच्छा हो और साथ-साथ शब्द भी। तो अवश्य ही उसके ऊपर प्रभाव पड़ता है। उसके लिए हमें एक छोटी-सी विधि सीख लेनी चाहिए, जो भी हम सोचें उसमें दूसरों के प्रति कल्याण की भावना, आगे बढ़ाने की भावना, उनका अच्छा हो, वे अपने मकसद में कामयाब हों, इस तरह से इंटेंशन रखकर हम संकल्प करते हैं तो अवश्य ही वो तो आगे बढ़ेगा ही लेकिन उनकी दुआएं हमें भी मिलेंगी और हमारी भी साथ-साथ उन्नति होगी। उसी तरह यदि आपका बच्चा पास नहीं हुआ या अपने मकसद में कामयाब नहीं हुआ, तो उस पौधे(बच्चे) को भी हमें अच्छे वायब्रेशन देकर, अच्छे संकल्प देकर ऊँचा उठाना है ताकि वो आगे सफल हो जाये। ऐसी ऊर्जा हमारे परिवार में और दूसरों के प्रति निरंतर करते रहना चाहिए, जिससे न सिर्फ प्रकृति बल्कि आपसी सम्बंधों में भी समरसता रहेगी। ये सब है संकल्प शक्ति की कमाल। हमारे संकल्प कभी भी व्यर्थ न हों। हर संकल्प में दुआएं हों। ऐसे अभ्यास कर अपने आप को सशक्त करते हुए दूसरों को भी शक्ति दे सकते हैं। हमारी शक्ति लॉस होती ही है निगेटिव और व्यर्थ संकल्पों में। इससे हमें बचना है।

वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है

जितना तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का ऑर्डर है। बाकी कोई ऑर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा- उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक बंधा हुआ होना चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह अभी आंसू बहा रहे हैं। रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पेनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनिया से हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग। जिसने नींद का त्याग किया, उसने सब त्यागा। 3:30 बजे मीठी नींद आती। बाबा कहता उठ। वह भी बाबा ने छीन लिया, बाकी क्या चाहिए। इसलिए हमेशा बाबा कहता बेहद के वैरागी बनो। जितना वैरागी उतना योगी रहते।

सेवा तो आप लोग कर ही रहे हो। जो कुछ भी है उसे सफल करते चलो। कल का क्या पता। जितना बुद्धि में सेवा है, उनका ही महान भाग्य है। परन्तु सेवा के जोश के साथ-साथ होश भी चाहिए।

लौकिक को भी थोड़ा चलाना, करना ठीक रहता। नहीं तो सर्विस में डिससर्विस हो जाती। जितना सर्विस में बुद्धि लगी रहे उतना अच्छा है, आर्टिकल लिखो, डायलॉग लिखो, अनुभव लिखो, आर्टिस्ट बनो। किसी न किसी कार्य में बुद्धि लगी रहे। सब आर्ट सीखो, वक्त पर सब काम आता है।

अगर सेवा में फोर्स है तो कुमारों के कारण, कुमार अपना तन भी लगाते, मन भी लगाते, धन भी लगाते। सभी सेन्टर्स की यह रिज़ल्ट है। आप कुमार सब चिन्ताओं से मुक्त हो। कुमार-कुमारी माना संगम के जीवनमुक्त। कोई बन्धन नहीं। वृत्ति में मेरा बाबा, वायुमण्डल में वायब्रेशन है सब बाबा के बनें, कल्याण की भावना है। जीवन है बाबा की सेवा में। हम-आप दुनिया के वायुमण्डल, वायब्रेशन से मुक्त हैं। हम दुनिया को बाबा के वायुमण्डल में बांधते हैं।

आप सब 100 प्रतिशत लकी हो। आप सबको सर्विस के लिए बाबा ने अपनी भुजायें बनाया है। आप सब समर्पण हो। अगर आप धन से सेवा नहीं करते तो सर्विस नहीं बढ़ती। आप यह नहीं सोचो हमें बाबा ने नौकरी का बन्धन दिया। आप धन से सहयोग न दो तो सेन्टर कैसे चले! आपका पूरा तन-मन-धन बाबा के प्रति है। आप 100 कमाओ उसमें 25 माँ-बाप को, 25 अपने लिए तो 50 बाबा के कार्य में लगाओ। यही सोचो मैं बाबा के कार्य के लिए 5 टका कमाने गया हूँ। दुनिया ही गन्दी है। गन्दों के बीच हमें अपनी रूहानियत में रहना है क्योंकि बाबा के लिए कमा रहा हूँ। लौकिक माँ-बाप ने पाला है उनको भी सहयोग देना मेरा फर्ज़ है। धन को परसेन्टेज से ज़रूर बाँटो।

जो कुमार अपने हाथ से पकाकर खाते हैं, मैं उन्हों को अपने से भी बड़ा मानती हूँ। आप धन्य हो। अगर सूखी रोटी खाकर चलते, तो बाबा आपको मदद देगा। आप दो रोटी खाओ बाबा की मस्ती में रहो। ऐसे नहीं सोचो रोज़-रोज़ ऐसे कैसे होगा। अरे रोज़ संगम थोड़े ही आयेगा। जितना तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है। अतीन्द्रिय सुख के रस में रहो, रोटी तो घोड़े को घास है, इसका रस नहीं।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

अभी चलने का नहीं उड़ने का समय है

हम कहेंगे अभी हमने आधा घंटा योग किया, तो आधा घंटा योग किया या बीच बीच में युद्ध किया? आधा घंटा आप योग में थे या नहीं, यह आप ही जान सकते हो। तो सारा दिन हम यह चेकिंग करें। चेकिंग करेंगे तो चेंज होंगे। सिर्फ चेकिंग करेंगे तो दिलशिकस्त हो जायेंगे। बाबा चाहता है कि हम अपने स्वमान में रहें। साथ में हम संगठन में रहते हैं, गाँव-गाँव में हमारा घर है, इतने बड़े परिवार के हम हैं। देखो हम झाड़ के चित्र में बीज के साथ बैठे हैं। तो पूर्वज हो गये ना, पूज्य भी हैं, पूर्वज भी हैं। विश्व कल्याणकारी विश्व परिवर्तक हैं। जहान के नूर, बाबा की आँखों के तारे हैं। बाबा समय प्रति समय कितने स्वमान देते हैं। अमृतवेले हम बाबा से शक्ति लेकर अगर सारे दिन का स्वमान और टाइमटेबल सेट करें कि आज सारा दिन इस स्वमान के अनुभव में रहेंगे। अगर रोज़ एक स्वमान भी याद करें और सारा दिन उसी स्वमान में स्थित रहने का अभ्यास करें, तो बहुत मजा आयेगा। संगठन में रहने के लिए दूसरा शब्द है - सबको सम्मान दो। स्वमान में रहो और सम्मान दो।

संगठन में चलना और सफल होना उसके लिए सबको सम्मान दो क्योंकि संगठन में भिन्न-भिन्न संस्कार तो होंगे ही। सभी एक नम्बर तो नहीं होंगे। माला में 108वां नम्बर भी तो है ना! बाबा ने सभी की खातिरी तो बराबर की। फिर भी 108वां नम्बर क्यों बना! यह हरेक का पुरूषार्थ अपना-अपना है। कुछ भी हो संगठन में एक-दो को सम्मान दो और सम्मान लो।

जैसे रास्ते में कोई गिर गया है तो आप उस गिरे हुए व्यक्ति को लात मारेंगे या सहारा देकर उठायेंगे? मर्यादा तो यही है ना कि उसे सहारा दो, खड़ा करो। तो मानो ब्राह्मण परिवार में कोई संस्कार वश गिर गया है तो हमारा काम क्या है? उसको सहारा देना। सहारा क्या देंगे, शुभ भावना, शुभ कामना। भले वो नहीं देवे, मैं तो दूं। संगठन में सम्मान देना है। साथ-साथ परिवार में सबके प्रति यही इच्छा रहती है कि यह सुधर जाए। इसको कोई ऐसी शिक्षा दें जो यह अपने को ठीक कर लेवे। लेकिन शिक्षा भी अगर क्षमा भाव के बिना होगी तो शिक्षा रोब का रूप ले लेती है। रोब भी क्रोध का ही अंश है। मम्मा हमेशा कहती थीं कि मुझे बाबा ने काम दिया है कि आपको इन अलग-अलग डाल-डालियों को इकट्ठा करके यह चन्दन की डाली बनाना है। हम भी मास्टर प्यार के सागर हैं। तो मास्टर ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर हमारा स्वरूप होना चाहिए। तो शिक्षा भले दो लेकिन क्षमा का स्वरूप हो।

यह हमको चेक करना है कि हम स्वमान में रहते हैं? अपने मन का भी टाइम टेबल बनाओ। किस स्वमान में रहना है, मन्सा से क्या सेवा करना है? कर्मणा क्या करना है, संगठन में स्नेह से कैसे चलना है। एक-दो से कैसे गुण उठाना है। यह सारा मन का टाइमटेबल रोज़ सुबह अपना बनाना चाहिए। मन का टाइमटेबल बनाने से आपकी चेकिंग बहुत अच्छी हो जायेगी। मन का मालिक बनने के बिना कभी भी ऊंच पद नहीं पा सकते। जो स्व का मालिक नहीं बन सकता, वो विश्व का मालिक कैसे बनेगा! पहले स्वराज्य फिर विश्व राज्य। यह ज्ञान का दर्पण है, इस दर्पण में अपना मुख आपेही देखो।

अचानक के खेल तो शुरु हो गये हैं ना, अति में जाना बाकी है। संसार के समाचार सुनो तो क्या हो रहा है! जो बाबा ने कहा है वो होना शुरू हो गया है। हमारी स्पीड भी वही है या नहीं, अभी तो उड़ने का समय आ गया है। बाबा ने अभी चलने को कैंसिल कर दिया है। उड़ेंगे तब जब बेफिकर बादशाह होंगे। जो करना है सो अब करना है। चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे धन से। अगर बेफिकर बादशाह बनकर रहना है तो कोई हद का संकल्प न हो। बाबा में पूरा फेथ हो। अरे हम अच्छे हैं, अच्छे रहेंगे और अच्छा होगा। इतना निश्चय पक्का होना चाहिए। हमारा साथी कौन है! अति भी हो जाये तो भी साक्षी होकर देखना है। हमारे साथ बाबा है। यह बाबा का निश्चय, हमें निश्चिंत बनायेगा। ये कर लूं, यह बचा लूं। यह आना माना संशय बुद्धि। और संशय बुद्धि विजयन्ती हो नहीं सकता। हमारा बाबा से प्यार है, हम बाबा के प्यार में खोये हुए हैं।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

ज्ञान माना अन्दर डीप जाना

जो न्यारा बनने की प्रैक्टिस नहीं करते उनको माया छोड़ती नहीं। माया उसका पीछा करती है, देखती है यह भगवान का तो बने हैं पर मेरे बिगर रह नहीं सकते। मेरे पास घर है, धन है, पदार्थ है, माया दिखाती है सब। बाबा कहता है मैं दिखाता नहीं हूँ, मेरे पास जो है, इन आँखों से देख नहीं सकते हो और बॉडी कान्सेस से समझ नहीं सकते हो। मेरे पास है तेरे को देने के लिए, उसके लिए सोल कॉन्शियस रहो तो सोल को पता चले। जब तक थोड़ा बॉडी कॉन्शियस है तो बुद्धि ऊपर नहीं जाती है, इधर-उधर जाती है। जब सोल कॉन्शियस है तो ऊपर जाती है। बाबा ऊपर से इतना देता है, जो उसकी भेंट में सब किचड़ा है। बाबा स्वच्छ बना देता है। अन्दर से इतनी स्वच्छता, मैं शुद्ध आत्मा हूँ फिर शान्त, मैं बाप की हूँ तो प्यार पैदा हो जाता है। किसी ने कहा मुझे प्यार का अनुभव नहीं होता है। अरे तुम प्यार करके देख। वो प्यार कर रहा है, यहाँ-वहाँ से निकालके प्यार करने के लिए आया है। परन्तु झूठा प्यार भी चाहिए, जिस प्यार में दुःख समाया है वो भी नहीं छोड़ना है। और सच्चा प्यार करने वाला बाबा जो सदा सुख देता है, वो भूल जाता है!

ज्ञान माना अन्दर डीप जाना, मैं क्या सोचती हूँ, क्या बोलती हूँ। अपनी करनी को देख, वाणी को देख, विचार को देख। बाबा का आत्माओं से प्यार है। हर आत्मा से प्यार है। कोई भी आत्मा हाँ-हाँ करती है तो पकड़ लेता है। अचानक भी कोई अच्छा अनुभव कराके पकड़ लेता है। फिर वो जो पुराने अनुभव हैं उनको छोड़। कम से कम चार बातें बुद्धि में रखो। बिचारी बुद्धि को भटकने से छुड़ाओ। मन भी उसके साथ है। संस्कार हैं तो आत्मा में ही। मन भटकता क्यों है! बुद्धि ठीक काम क्यों नहीं करती है! संस्कार पुराने खत्म क्यों नहीं होते हैं? फिर ज्ञान का सिमरण भी नहीं कर सकते हैं। बाबा ने कहा है हे आत्मा तुम मन को शान्त करके बुद्धि से योग लगा, प्रैक्टिकली बुद्धि लगाई तो संस्कार चेंज हो जाते हैं। संस्कारों में पुराने विकारी कर्म सम्बन्ध भर गये थे, जो अभी समझ में आया है, वह चेंज हो रहा है।

बुद्धि ठीक काम करती है तो दिमाग ठण्डा रहता है। जब मन शान्त होता है, दिल में बड़ी खुशी आती है। पहले मेरा दिल-दिमाग कैसा था, अभी कैसा है। चेंज आता है सुनते-सुनते। अन्दर इंसान को फीलिंग आती है कर्म के अनुसार। अभी अगर मैं चेंज होती हूँ तो फील होता है। अभी तक अलबेलाई है, फील होता है। यह अन्तिम जन्म है, अन्तिम घड़ियां हैं, आदि में बाबा के थे, होंगे यह सब स्मृति में है। जिसका स्व पर ही राज्य नहीं है वो स्वदर्शन चक्रधारी नहीं हो सकता। या तो चक्कर में है या किसके साथ टक्कर में है वो स्वदर्शन चक्र क्या घुमायेगा। अपने को चेक करना है किसके चक्कर या टक्कर में तो नहीं हूँ? परन्तु यह चेक करने की फुर्सत ही नहीं है, बाकी सब काम हो रहा है। चक्कर में हैं तो बाबा की याद है ही नहीं, फिर बहाना कुछ हो। अन्दर की आँख खोलकर बाबा को देख, खुद को न देख, पर बाबा को तो देख। बाबा देख रहा है पर बाबा दिखाई नहीं देता है।